# “लिङ्गाष्टकम्”

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिङ्गं निर्मलभासितशोभितलिङ्गम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 1

देवमुनिप्रवरार्चितलिङ्गं कामदहम् करुणाकरलिङ्गम्।
रावणदर्पविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 2

सर्वसुगन्धिसुलेपितलिङ्गं बुद्धिविवर्धनकारणलिङ्गम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 3

कनकमहामणिभूषितलिङ्गं फणिपतिवेष्टितशोभितलिङ्गम्।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 4

कुङ्कुमचन्दनलेपितलिङ्गं पङ्कजहारसुशोभितलिङ्गम्।
सञ्चितपापविनाशनलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 5

देवगणार्चितसेवितलिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकरकोटिप्रभाकरलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 6

अष्टदलोपरिवेष्टितलिङ्गं सर्वसमुद्भवकारणलिङ्गम्।
अष्टदरिद्रविनाशितलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 7

सुरगुरुसुरवरपूजितलिङ्गं सुरवनपुष्पसदार्चितलिङ्गम्।
परात्परं परमात्मकलिङ्गं तत् प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्॥ 8

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत् शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥

इतिः श्री लिंगाष्टकम स्त्रोतम सम्पूर्णम

## लिङ्गाष्टकम् सभी 9 श्लोकों का हिंदी में अनुवाद

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ। जिनकी ब्रह्मा विष्णु एवं देवताओं द्वारा भी अर्चना की जाती है जो सदैव निर्मल भाषाओं द्वारा पुजित हैं और जो लिंग जन्म-मृत्यू के चक्र का विनाश करता है

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जो सभी देवताओं और मुनियों द्वारा पुजित है जो काम का दमन करता है तथा जो करूणामयं भगवान् शिव का स्वरूप है जिसके द्वारा रावण के अभिमान का भी नाश हुआ ।

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जो सभी प्रकार के सुगंधित पदार्थों द्वारा सुलेपित लिंग है, जो बुद्धि का विकास करने वाला है तथा सिद्ध- सुर (देवताओं) एवं असुरों (राक्षसों ) सभी के लिए वन्दित है ।

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जो स्वर्ण एवं महामणियों से विभूषित एवं सर्पों के स्वामी से शोभित सदाशिव लिंग तथा जो कि दक्ष के यज्ञ का विनाश करने वाला है।

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जो कुंकुम एवं चन्दन से सुशोभित है जो कमल हार से सुशोभित है। सदाशिव लिंग जो कि हमें सारे संञ्चित पापों से मुक्ति प्रदान करने वाला है ।

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जो सभी देवों एवं गणों द्वारा शुद्ध विचार एवं भावों के द्वारा पुजित है तथा करोडों सूर्य सामान प्रकाशित हैं।

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जो आठों दलों में मान्य तथा आठों प्रकार के दरिद्रता का नाश करने वाले सदाशिव लिंग जो सभी प्रकार के सृजन के परम कारण हैं ।

मैं उन सदाशिव लिंग को प्रणाम करता हूँ जो देवताओं एवं देव गुरू द्वारा स्वर्ग के वाटिका के पुष्पों द्वारा पुजित परमात्मा स्वरूप जो सभी व्याख्याओं से परे है ।

जो कोई भी भगवान शिव की उपस्थिति के साथ शिवलिंग की स्तुति में इन आठ श्लोकों का पाठ करता है, वह शिव के उस परम धाम को प्राप्त करता है और शिवके साथ प्रसन्नताको प्राप्त होता है!